Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ-4 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक-उपेन्द्रनाथ अश्क

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 39 पर दिए पाठ-4 'सूखी डाली' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पाठ-4 'सूखी डाली' के शेष भाग को समझेंगे इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक 'एकांकी संचय' निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे एकांकी से संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे जिनके उत्तर आप एकांकी को ध्यानपूर्वक सुनकर एवं समझकर ही दे पाओगे। अतः यह आवश्यक है कि आपका ध्यान पाठ की ओर ही केन्द्रित रहे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! एकांकी को आगे समझने से पहले आइए, यह जान लेते हैं कि पिछले सप्ताह हमने क्या पढ़ा था। 'सूखी डाली' उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा रचित एक पारिवारिक एकांकी है। परिवार के मुखिया दादा (मूलराज) 72 वर्ष की आयु में पोते-पोती से भरे-पूरे परिवार पर अपना पूरा अधिकार रखते हैं। 1914 के युद्ध में बड़े बेटे के शहीद

होने पर सरकार से उन्हें एक मुरब्बा (25 एकड़) ज़मीन मिलती है। अपनी मेहनत, साहस व दूरदर्शिता से दादा जी दस मुरब्बा में बदल देते हैं। समाज में उनका काफी रुतबा है।

एकांकी का आरंभ गुस्से में आती इंदु से होता है। बड़ी बहू के पूछने पर इंदु बताती है कि भाभी ने (बेला ने) रजवा को नौकरी से निकाल दिया है। इंदु कहती है कि जैसे ही मुझे पता चला कि छोटी भाभी ने परिवार की इतनी पुरानी नौकरानी को जवाब दे दिया तो मैंने भाभी को समझाया कि उन्हें प्यार से नौकर को समझाकर काम लेने की आदत डालनी होगी लेकिन भाभी का मानना है कि रजवा को न काम करने का सलीका है न ही घरवालों को काम करवाने का तब इंदु ने कहा कि भाभी नौकरों से काम लेने की तमीज़ होनी चाहिए।

बच्चो ! अब एकांकी को पृष्ठ संख्या ५३ से समझने का प्रयास करेंगे। इंदु बड़ी बहू के सामने बेला की बातों को दोहरा रही है। इंदु ने बेला से जब यह कहा कि भाभी नौकरों से काम लेने की तमीज़ होनी चाहिए। इंदु की इस सलाह को बेला ने अपमान समझा। वह चिढ़ कर बोली कि वह तमीज़ तो बस आप लोगों को है। उसके मायके में तो ऐसे गँवार नौकर दो घण्टे भी नहीं रह सकते। केवल झाड़ू लगा देने से ही कमरा साफ़ नहीं होता। इंदु बड़ी बहू से बेला की शिकायत कर रही थी। बेला एक प्रतिष्ठित तथा संपन्न कुल की सुशिक्षित लड़की है। इकलौती संतान होने के कारण उसे संयुक्त परिवार में रहना तथा कस्बे का वातावरण पसन्द नहीं है। बेला को अपने मायके का अहंकार है इसलिए वह हर समय मायके का गुणगान करती रहती है। उसका मानना है कि यहाँ के नौकरों को साफ़-सफ़ाई तथा काम करने का ढंग पता नहीं है।

इंदु ने बताया कि जबसे भाभी इस घर में आई हैं तब से वह हमें सुना रही है। उसके अनुसार हम और

हमारे नौकर, हमारे पड़ोसी गँवार हैं। बड़ी बहू इंदु की इन बातों को सुनकर अचंभित हो जाती है। इंदु ने भी भाभी को खरी-खोटी सुनाते हुए कह दिया कि अपने मायके का एक नमूना तो तुम हो ही। एक मिश्रानी भी ले आतीं तो उससे हम गँवार भी सीख लेते।

तभी इंदु की माँ (छोटी भाभी) और बेला की सास प्रवेश करती है। उनके पीछे रजवा भी है।

छोटी भाभी ने इंदु से रजवा के रोने का कारण पूछा और यह भी पूछा कि छोटी बहू (बेला) ने कोई कड़वी बात कह दी है क्या?

रजवा छोटी बहू (बेला) द्वारा काम करने से मना किए जाने पर छोटी भाभी से शिकायत करती है कि बेला को हमारे काम करने का तरीका पसन्द नहीं है और उन्होंने मुझे काम से भी हटा दिया है। वे कहती हैं कि उसे (रजवा को) वे (बेला की सास) अपने पास ही रख लें। रजवा उनका काम करके खुश रहेगी। अब वह छोटी बहू (बेला) का कामकाज नहीं करना चाहती है।

छोटी भाभी (इंदु की माँ) रजवा को समझाती है कि बेला अभी बच्ची है लेकिन तू तो सयानी है। तभी इंदु क्रोध में कहती है कि अपने मायके के सामने तो वह हमें कुछ समझती नहीं है। बड़ी बहू बेला के बारे में छोटी भाभी को बताती है कि बेला को हमारा खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना आदि कुछ भी पसन्द नहीं है। उसे हमसे, हमारे पड़ोस से हमारी हर बात से घृणा है। उसकी बात सुनकर छोटी भाभी चिंतित हो जाती है। वह कहती हैं फिर कैसे चलेगा क्योंकि हमारे घर तो सब मिलकर रहते हैं। बड़ों का आदर करते हैं। नौकरों पर दया और छोटों को प्रेम करते हैं। तभी मँझली बहू हँसते-हँसते प्रवेश करती है। इंदु भाभी से (मँझली बहू से) हँसने का कारण पूछती है तभी मँझली भाभी और बड़ी भाभी भी प्रवेश करती हैं। वे सभी भी मँझली बहू से इस प्रकार से हँसने का कारण पूछती हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोक देंगे तथा उस दौरान पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. बेला ने रजवा को काम से क्यों हटा दिया ?

प्रश्न 2. मिश्रानी ने नौकरी से हटाने के लिए बहूरानी (बेला) को क्या दलील दी ?

प्रश्न 3. इंदु ने बेला (छोटी भाभी) को क्या समझाने का प्रयास किया ?

बच्चो! प्रश्नों के उत्तर लिखने का समय अब समाप्त हो चुका है। आशा करती हूँ कि आपने प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-

उत्तर-1. बेला ने रजवा को काम का सलीका न होने के कारण काम से हटा दिया।

उत्तर 2. मिश्रानी ने बेला को मनाते हुए कहा कि मैं कुछ ही दिनों में आपके अनुसार काम सीख जाऊँगी। मुझे आपका काम करते बहुत थोड़ा समय हुआ है; बेला, मिश्रानी की इस बात से सहमत नहीं हुई।

उत्तर 3. इन्दु ने बेला को समझाते हुए कहा कि यह मिश्रानी काफ़ी समय से हमारे यहाँ साफ़-सफ़ाई, बर्तन व कपड़े धोने का काम कर रही है। नौकरों से काम लेने का ढंग होता है। अगर वह कोई काम न कर पाए तो तरीके से समझाया जाता है इस तरह नौकरी से नहीं निकालते।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या पैंतालीस को भी समझने का प्रयास करते हैं। मंझली बहू हँसने का कारण बताती है कि वह ऊपर सामान रखने गई थी। वह बेला और परेश की बातें बहुत अच्छे ढंग से समझ नहीं पाई क्योंकि बेला ग्रेजुएट और प्रतिष्ठित परिवार की पढ़ी-लिखी बहू है, जो फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलती है। उसका पति परेश भी उच्च शिक्षित है। बेला और परेश के अंग्रेज़ी

में बातें करने के कारण अल्पशिक्षित मँझली बहू उनकी बातें ज़्यादा समझ नहीं पाई। जितना उसने समझा वह उन्हें बताते हुए कहा कि छोटी बहू (बेला) ने सारा फर्नीचर निकालकर परेश से कहा कि इन गले-सड़े फ़र्नीचर को अपने कमरे में रहने नहीं दूंगी। बेला जिस कमरे में रहती है उसमें बहुत-से पुराना फर्नीचर रखा है, जिसका प्रयोग घर के बुजुर्ग सदस्य किया करते थे। इन पुराने फ़र्नीचरों से बेला को अपना कमरा कम कबाड़खाना अधिक नज़र आ रहा था। अपने कमरे में इतने सारे पुराने फर्नीचरों को देख कर बेला का पारा चढ़ गया। लेकिन परेश के विचार बेला से अलग थे। इन फर्नीचरों से परेश का गहरा लगाव होना स्वाभाविक है क्योंकि इनके साथ पूर्वजों का जुड़ाव है। परन्तु बेला को इनके साथ कोई भावनात्मक लगाव नहीं है। उसे ये फर्नीचर रद्दी के अलावा और कुछ नज़र नहीं आते हैं। वह इनसे मुक्ति पाना चाहती है।

मँझली बहू बताती है कि छोटी बहू हमें ही नहीं, बल्कि अपने पति को भी कुछ नहीं समझती। परेश के लाख समझाने पर भी उसने पुराना फर्नीचर कमरे से बाहर निकाल दिया। परेश की एक न चली तब इंदु ताना कसते हुए कहती है कि उसकी तो सिर्फ़ ज़बान चलती है, हाथ नहीं। दादाजी ने कुछ कपड़े धोने को कहा लेकिन वे बिना धुले ही गुसलखाने (स्नानघर) में पड़े हुए हैं। छोटी भाभी (इंदु की माँ) इंदु से उन कपड़ों को धोने के लिए कहती है। इसके बाद घर की सभी स्त्रियाँ छोटी बहू (बेला) की हँसी उड़ाती हैं।

बड़ी भाभी ने अपनी देवरानी (छोटी भाभी) से कहा कि बेला ने कर्मचन्द के द्वारा लाए गए मलमल के थान और रजाई के अबरों को नापसंद कर दिया था तथा परेश के बहुत समझाने पर भी उन्हें हाथ तक नहीं लगाया था। इस बात के लिए छोटी भाभी (बेला की सास) बेला को दोषी मान रही थी। उनका कहना था कि कपड़े पसन्द न आना अलग बात है परन्तु घर के सबसे बुजुर्ग दादाजी

की आज्ञा न मानना, उनके कपड़े समय पर धोकर न देना अलग बात है। यह सुनकर बड़ी भाभी छोटी भाभी को ताना मारते हुए कहती हैं कि इतना पढ़-लिख कर छोटी बहू क्या कपड़े धोएगी? इंदु भी ताना कसते हुए कहती है कि उनके हाथ मिट्टी के हैं, जो गल जाएंगे?

बाहर से दादा जी के हुक्का गुड़गुड़ाने की आवाज़ सुनते ही छोटी भाभी ने इंदु को कपड़े धोकर बाहर डालने के लिए कहा कि हो सकता है उन्हें ज़रूरत हो। छोटी भाभी के यह कहने पर कि मैं बहू (बेला) को समझा दूँगी, पर्दा गिरता है।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आशा करती हूँ कि आज हमने इस एकांकी को जितना समझा, आपको समझ आ गया होगा। सभी छात्र इस एकांकी के प्रथम दृश्य को पुन: पढ़ेंगे एवं समझने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"तुम भी बहन, बस - - - क्या इतना पढ़ लिख कर छोटी बहू कपड़े धोएगी?"

प्रश्न (i) उपर्युक्त वाक्य किसने, किससे, किस संदर्भ में कहा है?

प्रश्न (ii) छोटी बहू कौन है? वह किस पारिवारिक परिवेश से आई है?

प्रश्न (iii) वह परिवार से क्यों अलग होना चाहती है?

प्रश्न (iv) वह बात-बात में किस बात की चर्चा करती रहती है?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]